CEDSI
CENTRE OF EXCELLENCE FOR DAIRY SKILLS IN INDIA

+91 7428706078
info@cedsi.in

CEDSI TIMES

Your Skilling Partner...

करीमनगर ने पशुधन प्रजनन और दूध उत्पादन को बढ़ाने के लिए आईवीएफ तकनीक शुरू की

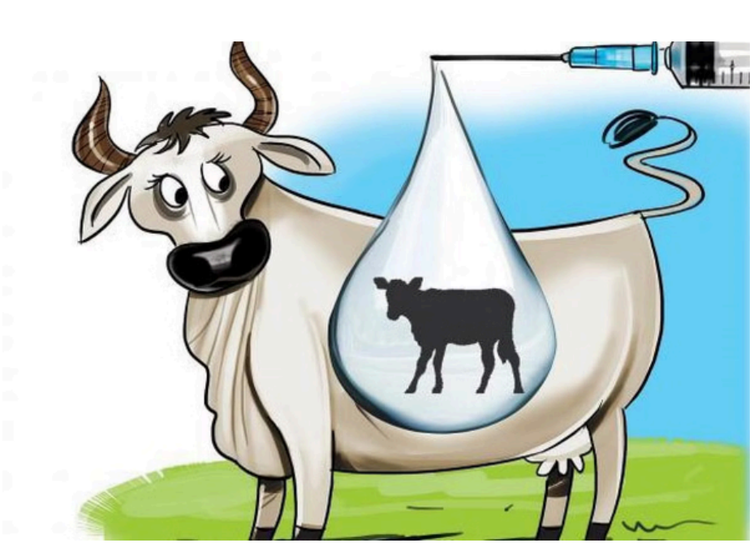

करीमनगर में पशुपालन विभाग ने पशुधन प्रजनन में सुधार और जिले में दूध उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए इन विट्रो फर्टिलाइजेशन (आईवीएफ) तकनीक शुरू की है। करीमनगर के लिए यह पहली पहल है, जिसका उद्देश्य 100 गायों पर आईवीएफ करके 100 आनुवंशिक रूप से बेहतर बछड़े पैदा करना है। विभाग को उम्मीद है कि अगले साल बछड़ों का पहला बैच पैदा होगा।

यह प्रगति पारंपरिक प्रजनन विधियों की जगह लेगी, जिससे केंद्र शासित प्रदेश में मवेशी प्रजनन प्रथाओं में एक महत्वपूर्ण छलांग लगेगी। आईवीएफ तकनीक शुरू करके, विभाग का लक्ष्य पशुधन की आनुवंशिक गुणवत्ता को बढ़ाना है, जिससे दूध की पैदावार और बेहतर रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ेगी।

आईवीएफ की शुरूआत करीमनगर के डेयरी उद्योग के मानकों को बढ़ाने की एक व्यापक रणनीति का हिस्सा है, जो स्थानीय किसानों की आय में वृद्धि में योगदान देता है। विभाग इस कार्यक्रम की प्रगति और प्रभावशीलता की निगरानी करने की योजना बना रहा है, उम्मीद है कि यह क्षेत्र में पशुधन विकास के लिए एक नया मानदंड स्थापित करेगा।

पंजाब ने डेयरी पशुओं की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए 30 लाख कृत्रिम गर्भाधान का लक्ष्य रखा

पशुओं में दूध उत्पादन और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए पंजाब के पशुपालन विभाग ने सालाना 30 लाख कृत्रिम गर्भाधान का लक्ष्य रखा है। इस पहल का उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण प्रजनन पद्धतियों के माध्यम से डेयरी पशुओं की आनुवंशिक क्षमता में सुधार करना है।

पंजाब के पशुपालन मंत्री श्री गुरमीत सिंह खुदियां ने राज्य के नाभा और रोपड़ स्थित दो वीर्य केन्द्रों पर प्रकाश डाला, जिनमें मुर्राह, नीली रावी, होलस्टीन फ्रीजियन (एचएफ), एचएफ क्रॉस, जर्सी और साहीवाल नस्लों सहित कुल 139 बैल हैं।

राज्य राष्ट्रीय गोकुल मिशन के तहत प्रमुख संतान परीक्षण (पीटी) और वंशावली चयन (पीएस) परियोजनाओं को लागू कर रहा है, जिसमें मुर्राह, साहीवाल और नीली रावी नस्लों पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है, जिसके लिए 2019 से 2026 तक 57 करोड़ रुपये का वित्तीय परिव्यय निर्धारित किया गया है। अब तक 25.8 करोड़ रुपये का उपयोग किया जा चुका है।

भारत नई मोबाइल ऐप तकनीक के साथ 21वीं राष्ट्रीय पशुधन जनगणना की तैयारी कर रहा है

21वीं राष्ट्रीय पशुधन जनगणना 2024 1 सितंबर से 31 दिसंबर तक आयोजित की जाएगी, यह पहली बार है जब डेटा एकत्र करने के लिए मोबाइल ऐप का उपयोग किया जाएगा। इस जनगणना का उद्देश्य किसानों और डेयरी क्षेत्र के लिए नीतियों और कार्यक्रमों को सूचित करने के लिए व्यापक डेटा एकत्र करना है।

जनगणना में शामिल अधिकारियों और कर्मियों को प्रशिक्षित करने के लिए 29 अगस्त को बेलगावी में एक कार्यशाला आयोजित की गई। जिला पंचायत के मुख्य कार्यकारी अधिकारी राहुल शिंदे ने वैज्ञानिक गणना पद्धति के महत्व और जनगणना प्रक्रिया के दौरान रिकॉर्ड रखने में पारदर्शिता बनाए रखने पर जोर दिया।

मोबाइल ऐप डेटा संग्रह को सुव्यवस्थित करेगा, सटीकता में सुधार करेगा और मैन्युअल त्रुटियों को कम करेगा, जिससे नीति निर्माण के लिए अधिक विश्वसनीय डेटाबेस सुनिश्चित होगा। एकत्रित डेटा देश भर में पशुधन प्रबंधन, उत्पादकता और किसानों की आजीविका को बढ़ाने के लिए लक्षित कार्यक्रम विकसित करने के लिए महत्वपूर्ण होगा।

इस तकनीकी उन्नति से गणना प्रक्रिया और अधिक कुशल बनने की उम्मीद है, जो पशुधन प्रबंधन और नीति विकास के प्रति भारत के दृष्टिकोण को आधुनिक बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा।

GADVASU ने पशु आहार के सतत समाधान के लिए A S Cattle Feeds के साथ साझेदारी की

गुरु अंगद देव पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय (GADVASU) ने आहार निर्माण के लिए परामर्श सेवाओं पर सहयोग करने के लिए A S Cattle Feeds के साथ एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए हैं। इस पहल का उद्देश्य नवीन आहार समाधान विकसित करने के लिए अकादमिक अनुसंधान का लाभ उठाकर पशु कृषि क्षेत्र में स्थिरता को बढ़ाना है। यह समझौता ज्ञापन वास्तविक दुनिया की चुनौतियों, विशेष रूप से पशु पोषण को बढ़ाने और समग्र उत्पादकता में सुधार लाने के लिए अनुसंधान और उद्योग को एकीकृत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

पंजाब विधानसभा के अध्यक्ष कुलतार सिंह संधवान ने राष्ट्रीय विकास का समर्थन करने और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में इस तरह के सहयोग के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि साझेदारी से न केवल स्थानीय पशु कृषि उद्योग को लाभ होगा बल्कि व्यापक आर्थिक और कृषि लक्ष्यों में भी योगदान मिलेगा। GADVASU के कुलपति डॉ. इंद्रजीत सिंह ने पशुपालन में व्यावहारिक समस्याओं के लिए अत्याधुनिक अकादमिक अनुसंधान को लागू करने के बारे में आशा व्यक्त की, नवाचार और सतत प्रथाओं को बढ़ावा देने के लिए विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया।

ए एस कैटल फीड्स का प्रतिनिधित्व करने वाली उद्यमी सुखप्रीत कौर ने इस समझौता ज्ञापन को एक दूरदर्शी पहल बताया जो टिकाऊ फ़ीड उत्पादन की बढ़ती ज़रूरत को संबोधित करती है। फ़ीड निर्माण में नवीनतम प्रगति को शामिल करके, साझेदारी का उद्देश्य उच्च गुणवत्ता वाला, पोषक तत्वों से भरपूर फ़ीड विकसित करना है जो पशु स्वास्थ्य और उत्पादकता को बढ़ावा देता है। यह सहयोग अभिनव समाधानों के माध्यम से पशु कृषि क्षेत्र की स्थिरता को बढ़ाने के लिए एक साझा प्रतिबद्धता को दर्शाता है, जिससे किसानों और उद्योग दोनों को लाभ होगा।

भारत ने रणनीतिक टीकाकरण और रोग नियंत्रण उपायों के साथ पशु स्वास्थ्य को प्राथमिकता दी

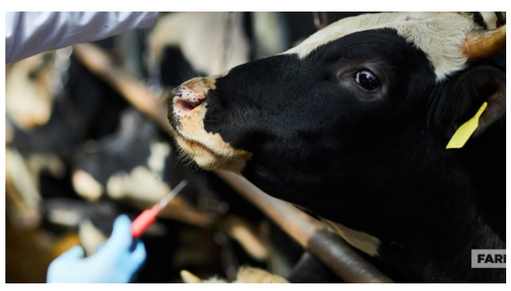

भारत अपने पशुओं और पशुधन को विभिन्न बीमारियों से बचाने के लिए लक्षित टीकाकरण अभियान और रोग नियंत्रण उपायों के माध्यम से महत्वपूर्ण कदम उठा रहा है। खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) द्वारा भारत सरकार के सहयोग से आयोजित पशु संक्रामक रोग प्राथमिकता पर तीन दिवसीय कार्यशाला का मुख्य विषय यही था।

कार्यशाला में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के 69 विशेषज्ञ एकत्रित हुए और उन्होंने पशु स्वास्थ्य को बेहतर बनाने तथा भारतीय पशु उत्पादों के लिए निर्यात अवसरों का विस्तार करने के लिए आठ राज्यों में खुरपका और मुंहपका रोग (एफएमडी) मुक्त क्षेत्रों के निर्माण पर चर्चा की।

पशुपालन एवं डेयरी विभाग (एएचडी) की सचिव डॉ. अलका उपाध्याय ने चार गंभीर बीमारियों- खुरपका और मुंहपका रोग (एफएमडी), पेस्ट डेस पेटिट्स रूमिनेंट्स (पीपीआर), ब्रुसेलोसिस और क्लासिकल स्वाइन फीवर को नियंत्रित करने में देश की प्रगति पर प्रकाश डाला। स्वदेशी रूप से विकसित टीकों का उपयोग करके सरकारी वित्त पोषित टीकाकरण अभियानों द्वारा समर्थित, इन प्रयासों का उद्देश्य पशुधन के स्वास्थ्य और उत्पादकता में सुधार करना है।

कार्यशाला में भारत में 20 उच्च प्राथमिकता वाले पशु संक्रामक रोगों की पहचान की गई, समन्वय, संचार, निगरानी, रोकथाम, नियंत्रण और सामाजिक-आर्थिक नियोजन पर ध्यान केंद्रित करते हुए एक व्यापक योजना विकसित की गई। यह पहल "वन हेल्थ" दृष्टिकोण के अनुरूप है, जो पशुओं, मनुष्यों और पर्यावरण की भलाई सुनिश्चित करती है, और भारत के लिए पशु उत्पादों में अपनी वैश्विक बाजार उपस्थिति को मजबूत करने का मार्ग प्रशस्त करती है।

हिमाचल के किसानों ने उन्नत पशु प्रजनन कार्यक्रम से आय में वृद्धि की

पशुपालन विभाग के त्वरित नस्ल सुधार कार्यक्रम की बदौलत हिमाचल प्रदेश के किसानों की आय और उत्पादकता में वृद्धि देखी जा रही है, जिसमें पशुधन की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए लिंग-सॉर्टेड वीर्य तकनीक का उपयोग किया जाता है। सरकाघाट उप-मंडल में लागू की गई यह उन्नत तकनीक मादा बछड़ों के जन्म की 90-95% संभावना सुनिश्चित करती है, जो दूध उत्पादन के लिए अधिक मूल्यवान हैं। मादा बछड़ों की संख्या बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करके, कार्यक्रम आवारा सांडों की बढ़ती समस्या को संबोधित करता है, सड़क दुर्घटनाओं और सामुदायिक व्यवधानों को कम करता है।

बलद्वारा पशु अस्पताल के डॉ. आशीष कुमार शर्मा ने बताया कि कार्यक्रम ₹250 में टीके की दो खुराक प्रदान करता है। यदि पहली खुराक के बाद गर्भाधान विफल हो जाता है, तो दूसरी खुराक मुफ़्त है; यदि दोनों विफल हो जाते हैं, तो लागत वापस कर दी जाती है। इस पहल को शुरुआती सफलता मिली है, जिसमें 64 गायों को टीका लगाया गया, 12 गर्भधारण हुए और तीन स्वस्थ मादा बछड़ों का जन्म हुआ।

नगरोटा गांव की यशोदा देवी जैसे किसानों ने अपनी गायों द्वारा स्वस्थ मादा बछड़ों को जन्म दिए जाने के बाद आभार व्यक्त किया। मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुखू द्वारा समर्थित इस पहल को एक बड़ा बदलाव माना जा रहा है, क्योंकि इससे दूध उत्पादन में वृद्धि होगी, आवारा पशुओं की संख्या में कमी आएगी और क्षेत्र में कृषक समुदाय के लिए आजीविका में वृद्धि होगी।

पंजाब का साइलेज उद्योग फलफूल रहा है, जिससे चारा सुरक्षा और डेयरी फार्मिंग को बढ़ावा मिल रहा है

ग्रामीण क्षेत्रों में पशु चिकित्सा देखभाल को बेहतर बनाने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में, पुदुकोट्टई जिले में आठ मोबाइल पशु चिकित्सा क्लीनिक शुरू किए गए हैं। इन क्लीनिकों का उद्देश्य दूरदराज के गांवों में पशुओं को मुफ्त चिकित्सा सेवाएं प्रदान करना है, जहां पशु चिकित्सा अस्पतालों और औषधालयों तक पहुंच नहीं है।

डॉ. हरिंदर सिंह खन्ना, जिन्होंने 1992 में भारत की पहली व्यावसायिक चारा प्रसंस्करण कंपनी, एक्सेलेंट एंटरप्राइजेज प्राइवेट लिमिटेड की स्थापना की, साइलेज उत्पादन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। पंजाब में अब 220 साइलेज बनाने वाली इकाइयाँ हैं, जो 2022-23 में 3.5 लाख टन बेल साइलेज का उत्पादन करेंगी, जिसका मूल्य लगभग 210 करोड़ रुपये है। इसकी मांग पंजाब से आगे तक फैली हुई है, जिसमें जम्मू और कश्मीर, राजस्थान, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश और गुजरात को महत्वपूर्ण निर्यात शामिल है।

हालांकि, गुरु अंगद देव पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय (GADVASU) के विशेषज्ञ चेतावनी देते हैं कि हानिकारक फफूंद और कवक को रोकने के लिए उचित साइलेज बनाना और भंडारण करना आवश्यक है। वे किसानों को गुणवत्ता बनाए रखने और प्लास्टिक कचरे के निपटान से पर्यावरण संबंधी चिंताओं से बचने के लिए साइलेज का सावधानीपूर्वक प्रबंधन करने की सलाह देते हैं।

हम कौन हैं?

सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस फॉर डेरी स्किल्स इन इंडिया (सीईडीएसआई) "सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस फॉर एग्रीकल्चर स्किल्स इन इंडिया (सीईएएसआई)" के तहत काम कर रहा है, यह एक स्वायत्त संगठन है जो "**एग्रीकल्चर स्किल कौंसिल ऑफ़ इंडिया (ASCI)**" के तत्वावधान में काम कर रहा है। कृषि और संबद्ध क्षेत्रों के संगठित और असंगठित क्षेत्रों में लगे किसानों, वेतनभोगी श्रमिकों, स्व-रोज़गार पेशेवरों, विस्तार श्रमिकों आदि के कौशल और क्षमता निर्माण के लिए **कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय (एमएसडीई**) के तहत काम करना।

सीईएएसआई कृषि के विभिन्न उप-क्षेत्रों में उत्कृष्टता केंद्रों का एक शीर्ष संगठन है।

- सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस फॉर डेरी स्किल्स इन इंडिया (सीईडीएसआई)
- सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस फॉर हॉर्टिकल्चर स्किल्स इन इंडिया (सीईएचएसआई)
- सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस फॉर फार्म मेकेनिज़शन स्किल्स इन इंडिया (सीईएफएमआई)

सीईडीएसआई सदस्यता उद्योग के नेताओं, नीति निर्माताओं, विकास चिकित्सकों, डेयरी वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं, छात्रों और किसानों को डेयरी उद्योग के लिए आसन्न महत्व के मुद्दों पर बहस और चर्चा करने के लिए एक अनूठा मंच प्रदान करेगी।

+91 7428706078

info@cedsi.in

www.cedsi.in Follow us on Facebook Cedsi Dairyskills Follow us on Twitter @CEDSI_India Follow us on Instagram @cedsi_india Follow us on linkedin Cedsi dairy COE

Centre of Excellence for Dairy Skills in India

Join Our Membership Drive and Get Benefits of

- Platform to interact with other members in the sector
- Networking opportunities with corporate leaders and government authorities
- Special costs of training in Skill India Certified Programmes
- Access to our Journal and Publications
- Expert advice in day-to-day operations and management of livestock /farm productions
- Free registration on the job portal and regular updates on job vacancies in the sector
- Recognize your organization with CEDSI Yearly Awards and Recognition
- Chance to reach across the board through advertising in our press releases, news and articles
- Consultative and advisory services to help members
- Consulting and advisory services to help members
- Periodic e-newsletter for the latest news, govt. announcement and schemes in dairy sectors
- Updates on training programs of CEDSI and access to the training calendar

Who Can Become a Member -

Corporates/ Cooperatives | NGO's/CSR Foundations | Dairy Farmers | Students | Professional

www.cedsi.in

17th July 2024

@cedsi_india

CEDSI : रविविंग स्किल्स एंड जनरेटिंग लाइवलीहुड

किसानों/छात्रों/उद्यमियों के लिए कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम

- डेयरी किसान / उद्यमी
- डेयरी फार्म पर्यवेक्षक
- डेयरी कार्यकर्ता
- पशु स्वास्थ्य कार्यकर्ता
- कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन
- पशु चिकित्सा क्षेत्र सहायक
- पशु चिकित्सा नैदानिक सहायक
- बछड़ा पालन
- कृषि उपकरण तकनीशियन
- डेयरी फार्म अर्थशास्त्र और प्रबंधन
- उद्योग संरेखित प्रमाणन कार्यक्रम (बेरोजगार युवा और छात्र)

एफपीओ उन्मुख प्रशिक्षण कार्यक्रम

- उत्पाद प्रौद्योगिकी और प्रक्रियाओं पर एफपीओ सदस्य अभिविन्यास।
- एफपीओ मार्केट लिंकेज
- एफपीओ शासन
- एफपीओ लेखा

डेयरी कॉरपोरेट्स और सहकारी समितियों के लिए प्रमुख कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम

- चिलिंग प्लांट तकनीशियन
- बल्क मिल्क कूलर ऑपरेटर
- ग्राम स्तरीय दुग्ध संग्रह केन्द्र पर्यवेक्षक
- दूध परीक्षक
- ग्रीन हाउस गैसों का शमन
- दूध की गुणवत्ता आश्वासन
- मिल्क डिलीवरी बॉय
- दूध खरीद और इनपुट पर्यवेक्षक
- डेयरी उद्योग में अपशिष्ट प्रबंधन
- चारा और चारा प्रबंधन
- स्वच्छ दूध उत्पादन
- निर्णय समर्थन प्रणाली / डेटा विश्लेषिकी

सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस फॉर डेरी स्किल्स इन इंडिया